P. R. No.: DL(S)-17/3082/2009-11
Rgn. No.: DELHIN/2000/2473

-मंगल मंत्रों के उच्चारण से अधिवेशन का शुभारंभ करते हुए पूज्य गुरूदेव, पूज्या साध्वीश्री, सौरभ मुनि, साध्वी समताश्री, साध्वी वसुमती तथा गुरूकुल के बच्चे।

-अधिवेशन में उपस्थित जन-समुदाय की एक झलक। (प्रथम पंक्ति बायें से) शैलेन्द्र सुराणा, विधायक श्री तरविन्दर सिंह मरवाह, श्री रिखबचन्दजी जैन, श्री आर.जी. जैन, श्री सलेकचन्द जी जैन कागजी आदि (दूसरी पंक्ति) श्री एम.एस. बिन्द्रा तथा श्रीमती बिन्द्रा आदि।

प्रकाशक व मुद्रक : श्री अरुण तिवारी, मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट (रजि.) जैन आश्रम, रिंग रोड़, सराय काले खाँ, इंडियन ऑयल पेट्रोल पम्प के पीछे, पो. बो.–3240, नई दिल्ली–13, आई. जी. प्रिन्टर्स 104 (DSIDC) ओखला फेस–1 से मुद्रित।

संपादिका : श्रीमती निर्मला पुगलिया

कवर पेज सहित
36 पृष्ठ

मूल्य 5.00 रूपये
जनवरी, 2011

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

थाम लो सम्हाल के देश की मशाल को- गीत प्रस्तुत करते हुए सैनिक गण वेश में मानव मंदिर गुरूकुल के बच्चे।
26 जनवरी 2011 गणतंत्र-दिवस की शुभ कामनाएं।

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

वर्ष : 11 अंक : 01 जनवरी, 2011

: मार्गदर्शन :
पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी

: सम्पादक :
श्रीमती निर्मला पुगलिया

: परामर्शदाता :
डॉ. राजाराम 'अबोध'

: सह सम्पादक :
श्री मनोज कुमार

: व्यवस्थापक :
श्री अरूण तिवारी

एक प्रति : 5 रुपये
वार्षिक शुल्क : 60 रुपये
आजीवन शुल्क : 1100 रुपये

: प्रकाशक :
मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट (रजि.)
पोस्ट बॉक्स नं. : 3240
सराय काले खाँ बस टर्मिनल के सामने, नई दिल्ली - 110013
फोन नं.: 26315530, 26821348
Website: www.manavmandir.com
E-mail: contact@manavmandir.com

इस अंक में

01. आर्ष वाणी - 5
02. बोध कथा - 5
03. संपादकीय - 6
04. गुरूदेव की कलम से - 7
05. चिंतन-चिरंतन - 13
06. गीतिका - 15
07. कहानी - 16
08. गजल - 17
09. भजन - 18
10. कहानी - 19
11. मौन की भाषा - 21
12. स्वास्थ्य - 23
13. चुटकुले - 24
14. बोलें तारे - 25
15. समाचार दर्शन - 27
16. झलकियां - 29

रूपरेखा-संरक्षक गण

श्री वीरेन्द्र भाई भारती बेन कोठारी, ह्युष्टन, अमेरिका
डॉ. कैलाश सुनीता सिंघवी, न्यूयार्क
श्री शैलेश उर्वशी पटेल, सिनसिनाटी
श्री प्रमोद वीणा जवेरी, सिनसिनाटी
श्री महेन्द्र सिंह सुनील कुमार डागा, बैंकाक
श्री सुरेश सुरेखा आवड़, शिकागो
श्री नरसिंहदास विजय कुमार बंसल, लुधियाना
श्री कालू राम जतन लाल बरड़िया, सरदार शहर
श्री अमरनाथ शकुन्तला देवी, अहमदगढ़ वाले, बरेली
श्री कालूराम गुलाब चन्द बरड़िया, सूरत
श्री जयचन्द लाल चंपालाल सिंघी, सरदार शहर
श्री त्रिलोक चन्द नरपत सिंह दूगड़, लाडनूं
श्री भंवरलाल उम्मेद सिंह शैलेन्द्र सुराना, दिल्ली
श्रीमती कमला बाई धर्मपत्नी स्व. श्री मांगेराम अग्रवाल, दिल्ली
श्री प्रेमचन्द ओमप्रकाश जैन उत्तमनगर, दिल्ली
श्रीमती मंगली देवी बुच्चा धर्मपत्नी स्वर्गीय शुभकरण बुच्चा, सूरत
श्री पी.के. जैन, लॉर्ड महावीरा स्कूल, नोएडा
श्री द्वारका प्रसाद पतराम, राजली वाले, हिसार
श्री हरबंसलाल ललित मोहन मित्तल, मोगा, पंजाब
श्री पुरुषोत्तमदास गोयल सुनाम पंजाब
श्री विनोद कुमार सुपुत्र श्री बीरबल दास सिंगला, श्री अशोक कुमार सुनीता चोरड़िया, जयपुर
श्री सुरेश कुमार विनय कुमार अग्रवाल, चंडीगढ़
श्री देवकिशन मून्दडा विराटनगर नेपाल
श्री दिनेश नवीन बंसल सुपुत्र श्री सीता राम बंसल (सीसवालिया) पंचकूला
श्री हरीश अलका सिंगला लुधियाना पंजाब
डॉ. अंजना आशुतोष रस्तोगी, टेक्सास
डॉ. प्रवीण नीरज जैन, सेन् फ्रेंसिस्को
डॉ. अशोक कृष्णा जैन, लॉस एंजिलिस
श्री केवल आशा जैन, टेम्पल, टेक्सास
श्री उदयचन्द राजीव डागा, ह्युष्टन
श्री हेमेन्द्र, दक्षा पटेल न्यूजर्सी
श्री प्रवीण लता मेहत्ता ह्युष्टन
श्री अमृत किरण नाहटा, कनाडा
श्री गिरीश सुधा मेहता, बोस्टन
श्री राधेश्याम सावित्री देवी हिसार
श्री मनसुख भाई तारावेन मेहता, राजकोट
श्रीमती एवं श्री ओमप्रकाश बंसल, मुक्सर
डॉ. एस. आर. कांकरिया, मुम्बई
श्री कमलसिंह-विमलसिंह बैद, लाडनूं
श्रीमती स्वराज एरन, सुनाम
श्रीमती चंपाबाई भंसाली, जोधपुर
श्रीमती कमलेश रानी गोयल, फरीदाबाद
श्री जगजोत प्रसाद जैन कागजी, दिल्ली
डॉ. एस.पी. जैन अलका जैन, नोएडा
श्री राजकुमार कांतारानी गर्ग, अहमदगढ़
श्री प्रेम चंद जिया लाल जैन, उत्तमनगर
श्री देवराज सरोजबाला, हिसार
श्री राजेन्द्र कुमार केडिया, हिसार
श्री धर्मचन्द रवीन्द्र जैन, फतेहाबाद
श्री रमेश उषा जैन, नोएडा
श्री दयाचंद शशि जैन, नोएडा
श्री प्रेमचन्द रामनिवास जैन, मुआने वाले
श्री संपतराय दसानी, कोलकाता
लाला लाजपत राय, जिन्दल, संगरूर
श्री आदीश कुमार जी जैन, न्यू अशोक नगर, दिल्ली
मास्टर श्री बैजनाथ हरीप्रकाश जैन, हिसार

आर्ष वाणी

अहनि अहनि भूतानि, गच्छांति यममंदिरे,
शेषाजीवितु मिच्छंति, किमाश्चर्यमतःपरं।।

-महाभारत

प्रतिदिन प्राणी यमराज के घर जा रहे हैं। इस तथ्य को जानते हुए भी शेष बचे हुए प्राणी जीना चाहते हैं। उनको विश्वास है कि हमारी मौत कभी नहीं आएगी। इससे बढ़कर और क्या आश्चर्य होगा?

बोध-कथा

निंदा और प्रशंसा

बहुत पुरानी कथा है। किसी राज्य में एक मूर्तिकार रहता था। उसकी जीवंत मूर्तियों को देख कर लोग दांतों तले उंगली दबा लेते थे। उसने अनेक राजाओं व महान हस्तियों की ऐसी मूर्तियां बनाई थीं कि वे स्वयं भी धोखा खा जाते थे कि मूर्तियों का अस्तित्व असली है या स्वयं उनका। धीरे-धीरे मूर्तिकार की ख्याति दूर-दूर तक फैलती गई।

एक दिन एक साधु उसके पास आया और बोला, 'पुत्र, अब केवल तुम्हारी एक माह की आयु शेष है। तुम चाहे कोई भी युक्ति आजमाओं तुम्हें मौत के मुंह में जाने से कोई नहीं रोक सकता।' यह कहकर साधु चला गया। साधु के जाते ही मूर्तिकार सोच में पड़ गया। आखिरकार उसने मौत से बचने की एक तरकीब सोच ही ली। उसने अपनी कई मूर्तियां बनाई। नियत दिन यमदूत के आते ही वह स्वयं उन मूर्तियों के बीच मूर्तिवत् खड़ा हो गया। यमदूत हैरान रह गया। वह असली मूर्तिकार को मूर्तियों के बीच में से पहचान ही नहीं पा रहा था किंतु मूर्तिकार के प्राण तो लेने ही थे, इसलिए यमदूत ने युक्ति से काम लिया। उसने मूर्तियों के करीब जाकर उनमें दोष न होते हुए भी दोष निकालने शुरू कर दिए। वह तरह-तरह से मूर्तिकार की आलोचना करने लगा।

मूर्तियों में कमियां सुनकर असली मूर्तिकार की भौहें टेढ़ी-मेढ़ी होने लगी। इस तरह यमदूत ने असली मूर्तिकार को पहचान लिया और इसके बाद कुछ मूर्तियों की प्रशंसा शुरू कर दी। अपनी तारीफ सुनकर मूर्तिकार के चेहरे पर चमक व प्रसन्नता के भाव आ गए। इसके बाद यमराज ने असली मूर्तिकार का हाथ पकड़ा और बोला, 'मानवीय भावों में निंदा और प्रशंसा के कारण ही इंसान मृत्यु को नहीं जीत पाता और जब तक जीवन है तब तक उसमें निंदा और प्रशंसा के भाव आते ही रहेंगे और मृत्यु का सिलसिला भी अनवरत चलता ही रहेगा।' यह कहकर यमदूत मूर्तिकार को अपने साथ लेकर चला गया।

सम्पादकीय

उत्साह और स्फूर्ति का पर्व है मकर संक्रांति

मकर संक्रांति सूर्य की उपासना का पर्व है। इस दिन सूर्य भूमध्य रेखा को पार करके उत्तर की ओर अर्थात् मकर रेखा की ओर बढ़ना शुरू हो जाता है। इसी को सूर्य की उत्तरायण गति कहते हैं। इससे पूर्व वह दक्षिणायन होता है। सूर्य के उत्तरायण होने का महत्व इसी कथा से स्पष्ट है कि सुर शैया पर पड़े भीष्म पितामह अपनी मृत्यु को उस समय तक टालते रहे, जब तक कि सूर्य दक्षिणायन से उत्तरायण नहीं हो गया। मकर संक्रांति होने पर ही उन्होंने अपनी देह त्यागी। हमारे ऋषि इसी अवसर को अत्यंत शुभ और पवित्र मानते थे। उपनिषदों में इसे 'देवदान' कहा गया है।

जब सूर्य किसी एक राशि को पार करके दूसरी राशि में प्रवेश करता है तो उसे संक्रांति कहते हैं। यह संक्रांति काल प्रतिमाह होता है। वर्ष के 12 महीनों में वह 12 राशियों में चक्कर लगा लेता है।

मकर संक्रांति का पर्व जीवन में संकल्प लेने का दिन भी कहा गया है। संक्रांति यानि सम्यक् क्रांति। जब प्रकृति शीत ऋतु के बाद बसंत के आने का इंतजार कर रही होती है। तो हमें भी अज्ञान के तिमिर से ज्ञान के प्रकाश की ओर मुड़ने और कदम तेज करने का मन बनाना चाहिए। आज के दिन मन और इंद्रियों पर अंकुश लगाने के संकल्प के रूप में भी यह पर्व मनाया जाता है। लोग नदी, सरोवर या तीर्थों में स्नान करने जाते हैं। इस दिन तिल, गुड़ के व्यंजन, ऊंनी वस्त्र, काले तिल आदि खाने और दान करने का विधान है। मकर संक्रांति ही एक ऐसा त्यौहार है, जिसमें तेल का प्रयोग किया जाता है।

माघ मास में पड़ने वाला मकर संक्रांति का पर्व असम में बिहू कहलाता है। बंगाल में संक्रांति और समस्त भारत में मकर संक्रांति के नाम से जाना जाता है। गुजरात में इसे उत्तरायण कहते हैं। जम्मू-कश्मीर व पंजाब में यह पर्व लोहड़ी के रूप में मनाया जाता है। जो संक्रांति के एक दिन पहले सम्पन्न होती है। सिंधी लोग इसे लाल लोही के नाम से जानते हैं। तमिलनाडु में लोग कृषि देवता के प्रति कृतज्ञता दर्शाने के लिए नई फसल के चावल और तिल के भोज्य पदार्थ से विधि पूर्वक पोंगल मनाते हैं। आंध्र में इस दिन घरों को रंगोली से सजाया जाता है। तथा घर की सभी देहालियों और आंगन में गोबर की छोटी-2 टिक्कियां रखी जाती हैं। जिनमें घास के तिनके लगाकर उनमें हल्दी और सिंदूर लगाया जाता है। पंजाब में लोहड़ी के अवसर पर बच्चे सभी घरों से लकड़ियां मांग कर लाते हैं, जिन्हें बाद में सामूहिक रूप से जलाया जाता है।

इस दिन गंगा सागर में स्नान का महात्म्य माना जाता है मकर संक्रांति के दिन देवता भी धरा पर उतर आते हैं। कहीं-2 काले कपड़े पहनने का भी रिवाज है। आज के दिन गंगा स्नान का विशेष पुण्य बखान किया गया है।

ऐसे पर्व शारीरिक शुद्धि के हैं, साथ-साथ आत्म शांति व पर्यावरण विशुद्धि के भी निमित बनते हैं।

○ **निर्मला पुगलिया**

व्यर्थ कुछ भी नहीं है इस धरती पर

संसार में हर प्राणधारी का अपना महत्व है। केवल प्राणधारी का ही नहीं, हर अणु और परमाणु का भी अपना महत्व है। जैसे एक विशालकाय संयंत्र में हर छोटे से छोटे पुर्जे में गडबड़ होते ही वह विशालकाय संयंत्र भी गड़बड़ा जाता है, वैसे ही इस सृष्टि के सम्पूर्ण संतुलन में, छोटे से छोटे प्राणधारी और पदार्थ की लघुतम इकाई अणु परमाणु का भी महत्वपूर्ण अवदान होता है। उस अमूल्य अवदान को न समझने के कारण हम अनेक बार अपने जीवन-धारण, मनोरंजन-प्रसाधन और कुलीन सभ्यता के नाम पर लघु प्राणधारियों, पेड़-पौधों और कीट-पतंगों को तुच्छ और व्यर्थ समझ बैठते हैं। किन्तु वस्तुतः इस तथाकथित सभ्य सोच में हमारी अज्ञानता और तुच्छ अहंकार की ही झलक मिलती है।

व्यर्थ है वह, जो दूसरे को व्यर्थ मानता है

एक पौराणिक कथा मुझे बहुत प्रीतिकर लगती है। विदेहराज जनक के पास व्यास पुत्र शुकदेव ज्ञान प्राप्ति के लिए पहुंचे। ज्ञान को उपलब्ध होने पर शुकदेव ने जनक को दक्षिणा देना चाहा। राजा जनक ने दक्षिणा के रूप में वह चीज मांगी जो बिल्कुल व्यर्थ हो, बेकार हो।

शुकदेव बहुत प्रसन्न थे। व्यर्थ चीजों से तो धरती अंटी पड़ी है। ज्यादा मेहनत करनी ही नहीं पड़ेगी। कहीं भी मिल जाएगी। राजमहलों से उतरकर सड़क पर आए। वहां चारों ओर मिट्टी ही मिट्टी बिखरी थी। उन्होंने मिट्टी की ओर हाथ बढ़ाया। कहते हैं शुकदेव को मिट्टी में से चीख सुनाई दी, तुम मुझे व्यर्थ समझ रहे हो? धरती का सारा वैभव और संपदा मेरे गर्भ में से ही प्रकट नहीं होती हैं? जाने दें और सबको, तेरा अपना यह शरीर, क्या मेरे से ही नहीं बना है? और शुकदेव का हाथ स्वयं पीछे हट गया।

थोड़ी दूर आगे बढ़े। रास्तें में एक पत्थर पड़ा था। आने जाने वाले लोग उसे ठोकरें मार रहे थे। शुकदेव अब मन-ही-मन खुश हुए। इस बार मिल गई व्यर्थ वस्तु। इस पत्थर का अर्थ हो ही क्या सकता है? उसे लेने के लिए हाथ आगे बढ़ाया। इतने में पत्थर में से आवाज आई- ज्ञानी होते हुए भी शुकदेव मुझे बेकार मान रहे हो? इन विशालकाय पर्वतों

में क्या मैं ही नहीं हूं, जो पेड़ पौधों, जड़ी-बूटियों, नदी-नालों को धारण किए हुए हैं। इन राजमहलों, आलीशान भवनों का निर्माण भी मेरे से ही नहीं होता है? जिनमें बैठकर तुम अपने को धूप, सर्दी और वर्षा से बचाते हो। फिर भी तुम मुझे व्यर्थ मान रहे हो? और लज्जित हो शुकदेव ने अपना हाथ फिर वापस खींच लिया।

अनमने से शुकदेव घूमते-घूमते शहर से बाहर पहुंचे। वहां कूड़े-कचरे और गन्दगी के ढेर लगे थे। उधर से गुजरने वाले लोग नाक पर रूमाल दिए, मुंह बिचकाए, तेज कदमों से आगे बढ़ रहे थे। स्पष्ट था उस गंदगी के ढेर के प्रति सबके मन में घृणा के भाव थे। यह देखकर दक्षिणा-दान के लिए निराश शुकदेव के मन में आशा की किरण जगी। गन्दगी का यह ढ़ेर तो बेकार ही है। तभी तो लोग इसके पास तक आना नहीं चाहते, घृणा से मुंह बिचका कर दूर से निकल जाना चाहते हैं। यों सोचते हुए उन्होंने जैसे ही उस गन्दगी के ढेर की ओर हाथ उठाया कि उसमें से भी किसी की आवाज सुनाई दी, ओ धर्मात्मा शुकदेव, तुमने यह कैसे तय किया, मैं व्यर्थ हूं, मेरा इस धरती पर कोई उपयोग नहीं है? क्या मेरे से बढ़िया खाद धरती पर मिलेगी? जो अन्न, जो फल-फूल, जिनसे तुम प्राण पाते हो, क्या वे मेरे से ही प्राण नहीं पाते हैं? अन्न और फसलों को पुष्ट परिपाक तथा मधुर स्वाद क्या मेरे से ही नहीं मिलता है? फिर भी तुम मुझे व्यर्थ मान रहे हो, क्या तुम्हारी ज्ञानो-पलब्धि की यही परिणति है? शुकदेव के हाथ जहां के तहां रह गए। वे तो सोच ही नहीं सकते थे कि गन्दगी के ढेर में से इतना कड़ा प्रतिवाद सुनने को मिलेगा।

पेड़ के नीचे एकान्त में बैठकर शुकदेव सोचने लगे, जब गली में पड़ी मिट्टी पत्थर और गन्दगी का ढेर तक इतने मूल्यवान हैं, फिर इस धरती पर व्यर्थ कौन हो सकता है। सोचते-सोचते वे आत्मस्थ हो गए। तभी भीतर में गूंज सुनाई दी सृष्टि का हर पदार्थ अपने में उपयोगी है। यह हमारा मिथ्या अहंकार ही होता है जो दूसरे को व्यर्थ या तुच्छ समझता है। वस्तुतः व्यर्थ और तुच्छ वह है, जो दूसरे को व्यर्थ और तुच्छ समझता है। और वह अपने अहंकार के सिवा और कौन हो सकता है? यह ज्ञान होते ही शुकदेव की आंखों में चमक आ गई।

वे जनक के पास आए। जनक राजर्षि ने दक्षिणा के बारे में पूछा। शुकदेव बोले- आपने संपूर्ण सृष्टि में जो व्यर्थ है, उसे दक्षिणा में चाहा था। हमारे अहंकार से अधिक तुच्छ और व्यर्थ कौन हो सकता है, इसलिए इस अहंकार को ही मैं आपको दक्षिणा में देने के लिए लाया हूं। जनक राजर्षि ने यह सुनते ही शुकदेव को गले से लगा लिया।

हर लघुतम इकाई का महत्व है सृष्टि-संतुलन में

अनेक बार प्रश्न सामने आता है इन मक्खी, मच्छर जैसे क्षुद्र कीट-पतंगों का सृष्टि जीवन में क्या महत्व हो सकता है। ये न केवल मानव के लिए कष्टकर हैं, अनेक प्रकार के रोगों को फैलाने वाले भी हैं। इनको मार देने में हर्ज ही क्या है? ये तर्क वे ही उठाते हैं जो केवल अपने स्थूल जीवन के सुख-दुःख को सतही नजर से देखते हैं। जिन्होंने सृष्टि-जीवन के रहस्यों को सूक्ष्मता से समझने की कोशिश की है, वे जानते हैं कि इस सृष्टि व्यवस्था में निरर्थक जैसा कुछ नहीं है। हर वस्तु अपनी-अपनी जगह महत्वपूर्ण है सार्थक है। घोड़े की लगाम का जितना महत्व है, उतना ही घोड़े के खुर में लगी कील का भी हैं। यदि वह छोटी-सी कील अपने स्थान से हट जाए, तो वह जीते हुए युद्ध की हार का कारण बन सकती है। इसी प्रकार इस सृष्टि-जीवन में जितना महत्व एक विशालकाय हाथी का है उतना ही एक चींटी का है, जितना महत्व एक महासागर का है, उतना ही एक सूक्ष्म जलकण का है, जितना महत्व एक भीमकाय पर्वत का है, उतना ही एक सूक्ष्म रजकण का भी है। सच्चाई यह है कि सूक्ष्मतम जीवाणु, एक सूक्ष्मतम जलकण और रजकण का महत्व एक हाथी, महासागर और विशाल पर्वत से ज्यादा है क्योंकि सूक्ष्म ही परस्पर मिलकर स्थूल को बनाते हैं, लघु ही मिलकर विराट् की रचना करते हैं। यदि ये लघु जलकण और रजकण न होते, तो इसी धरती पर न महासागर ही होते और न हिमालय जैसे विशालकाय पर्वत।

जीवन का मूल आधार लघुतम इकाइयां ही हैं। इन को तुच्छ और महत्वहीन समझना स्वयं की तुच्छता को प्रकट करना है। इनके साथ छेड़छाड़ करने का अर्थ है सृष्टि के साथ छेड़छाड़ करना। मैंने सुना है पर्यावरण अनुसंधान के संदर्भ में अमेरिका में एक विशेष प्रयोग किया गया। लगभग दस किलोमीटर के जंगल को चारों ओर से घेर लिया गया। उस जंगल का जीवन बिल्कुल सहज, प्रकृत रहे आदमी की ओर से उसमें कोई हस्तक्षेप नहीं हो। ऐसी कड़ी व्यवस्था कर दी गई। फिर उस जंगल के प्रकृत जीवन में से एक गिलहरी को हटा लिया गया। थोड़े ही समय बाद अनुसंधान कर्त्ताओं ने देखा, जंगल के स्वाभाविक जीवन पर असर आ गया। जंगल के जीवन का संतुलन गडबड़ाने लगा। जैसे विशाल हाल के कोने में रखी छोटी-सी मेज पर रखे एक गुलदस्ते को हटा लेने से पूरे हाल के जीवन में एक बार खालीपन छा जाता है, कुछ वैसा-सा ही खालीपन उस जंगल में अनुभव किया जाने लगा। जंगल के पेड़-पौधे, झाड़ियां, फल-फूल, पत्ते, नदी-नाले जैसे कह रहे थे कि हमारे परिवार का एक सदस्य हमसे बिछुड़ गया है।

शोधकर्ताओं ने उस गिलहरी को उसके पूर्व स्थान पर फिर रख दिया। उनको विचित्र अनुभव हुआ कि जैसे बिछुड़ा हुआ सदस्य वापस लौटने पर पूरा घर खुशियों से भर जाता है, पूरे घर की रौनक लौट आती है, वैसे ही जंगल के पेड़-पौधों, फल-फूल, पत्ते और पत्थर-पत्थर खुशियों में झूम उठे, जंगल की रौनक वापस लौट आई, जंगल का सन्तुलन पुनः मुखर हो उठा।

हर रज-कण सदस्य है सृष्टि परिवार का

यह सम्पूर्ण सृष्टि अपने में एक परिवार है। एक जल-कण से लेकर महासागर तक, एक रजकण से लेकर हिमालय और काकेशस की पर्वत-मालाओं तक, एक सूक्ष्मतम जीवाणु से लेकर विशालकाय हाथी तक, सबके सब इस सृष्टि परिवार के सदस्य हैं। वस्तुतः इनमें से न कोई छोटा है, न कोई बड़ा। सब एक-दूसरे के पूरक हैं। सबकी अपनी-अपनी विशेषताएं हैं। सबके अपने-अपने कार्य-क्षेत्र हैं और सबकी अपनी-अपनी कार्य शैलियां और समर्थताएं है। कवि मनीषी इमर्सन ने इसी दर्शन को कविता की भाषा में कहा है-

Talents differ,
All is well and wisely put,
It I cannot carry forests on my back,
Neither can you crack a nut.

गिलहरी पहाड़ से कह रही है, सबका प्रतिभा-बल अपना-अपना है। जो है, वह अच्छा है और बुद्धि संगत है। मैं यदि अपनी पीठ पर जंगल नहीं उठा सकती तो तुम भी एक छोटा सा अखरोट नहीं तोड़ सकते। यह स्थिति इस परिवार के हर सदस्य की है। इसलिए ये कार्य-सामर्थ्य अपने को अहंकार से भरने के लिए नहीं, परिवार की सम्पूर्णता को बरकरार रखने के लिए है। मक्खी, मच्छर, कीड़े-मकोड़े आदि जितने भी जीव-जन्तु हैं, ये सब सृष्टि परिवार के सदस्य हैं, इन सबकी अपनी उपयोगिता है। इनको क्षुद्र तथा निरर्थक मानना उचित नहीं है। फलों और फूलों से लदे उपवनों में क्या इन मक्खी-मच्छरों का योगदान नहीं है? वनस्पति विज्ञान ने क्या यह सिद्ध नहीं कर दिया है कि मक्खी-मच्छरों, भंवरों के पांवों में लगे रजकण ही लताओं, पेड़-पौधों पर आने वाले फलों-फूलों में प्रमुख कारण बनते हैं। फिर इनको निरर्थक कैसे माना जा सकता है? सृष्टि व्यवस्था में सबकी जरूरत होती है। जब जरूरत होती है तो ये जन्म लेते हैं। इनकी जब जरूरत नहीं होती, प्रकृति ही मरण का कारण भी भेज देती है। किन्तु यह सब प्रकृति के नियमों के तहत चलना ही ठीक रहता है। प्रकृति की व्यवस्था को अपने हाथ में लेना ठीक नहीं।

जहरीले जानवर भी अनुपयोगी नहीं

कुछ लोगों का तर्क है कि सांप, बिच्छू आदि जहरीले जानवरों का धरती पर क्या उपयोग है? ये जन्तु जिस किसी को काट खाते हैं, उसके शरीर में जहर फैल जाता है, बेचारे को प्राणों से हाथ धोना पड़ता है। इनको मार देना ही धर्म है। यह तर्क भी बहुत उथला है। इन जीवधारियों में जहर होता है इसलिए इनको मार देना चाहिए, इस तर्क के तहत तो आदमी के बारे में भी सोचा जाना चाहिए। सांप, बिच्छु जब काटते हैं, तभी जहर छोड़ते हैं, आदमी तो एक जबान से जहर ही जहर फैला देता है। फिर सांप, बिच्छू तभी काटते हैं, जब उनसे कोई छेड़छाड करता है, अथवा उन्हें अपनी असुरक्षा का भय होता है। आदमी तो बिना किसी भय या छेड़छाड़ के औरों के प्राणों का हरण करता रहता है। तालाब में क्रीड़ारत मेढ़कों से आदमी को कौन-सा भय होता है, फिर वह उन पर पत्थर क्यों मारता है? भेड़ बकरियां, गाय, हिरण, खरगोश जैसे गरीब बेचारे प्राणियों ने आदमी का क्या अपराध किया है? केवल अपनी जिह्वा तृप्ति और मनोरंजन के लिए इनको मारना क्या किसी भी दृष्टि से संगत ठहर सकेगा? दुनियां भर के पशु-पक्षी, पेड़-पौधों से अगर पूछा जाए तो निश्चित रूप से कहा जा सकता है, सब कोई इस आदमी से दुःखी और संत्रस्त मिलेंगे। इस धरती पर आदमी के आतंक और संत्रास का शिकार हर प्राणी मिलेगा। इस स्थिति में जहरीले जानवरों के लिए दिया जाने वाला तर्क क्या आदमी पर लागू नहीं होना चाहिए?

फिर सांप बिच्छू आदि का जहर जहर ही नहीं होता, अमृत भी होता है। वह मारता ही नहीं, बचाता भी है। वह मृत्यु दायी ही नहीं, जीवनदायी भी है। अनेक भयंकर असाध य रोगों की चिकित्सा में यह जहर बहुत उपयोगी होता है। रोगाणुओं को समूल नष्ट करने में यह महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। चिकित्सा-विज्ञान इसके गुणात्मक प्रभाव से भली भांति परिचित है। इसलिए जहरीले प्राणियों की हिंसा के समर्थन में दिए गए तर्क बिल्कुल आध ार-रहित होते हैं। जहरीले जानवरों की उपयोगिता इस पृथ्वी पर उतनी ही है, जितनी अन्य प्राणियों की।

वस्तुतः इस पृथ्वी पर जो है, चाहे वह छोटा है या बड़ा, जहरीला है या मधुरता देने वाला, सबकी अपनी उपयोगिता है, सबका अपना अर्थ है सबका अपना महत्व है। व्यर्थ है केवल हमारा अहंकार, जो औरों को व्यर्थ, अनुपयोगी और तुच्छ समझता है। इस तुच्छ अहंकार से मुक्त होकर अगर हम इस सृष्टि का अध्ययन करेंगे तो पाएंगे कि यह सृष्टि

कितनी सुन्दर है। अणु-अणु कितना महान् है, मूल्यवान है। इसका हर जीवधारी कितना अद्भुत है, अनुपम है। शायद इसी अनुभव में से गुजरते हुए भगवान महावीर ने कहा था- परस्परोपग्रहो जीवानां परस्पर उपग्रह, परस्पर सहयोग, परस्पर उपकार और पारस्परिक प्यार यही इन जीवधारियों का आधार है। हम भी इस अनुभव की नजर से यदि इस सृष्टि को देखेंगे तो इसका सम्पूर्ण अर्थ ही मिल जाएगा। फिर हर प्राणी की अर्थवत्ता हमारे समक्ष आने लगेगी। हर प्राणी कितना मूल्यवान है इसका बोध हो सकेगा।

इससे ठीक विपरीत अपने अहंकार पर सवार होकर, हम औरों को तुच्छ और व्यर्थ समझने की नजर विकसित करेंगे, तो न केवल ये धूलिकण, मक्खी-मच्छर, कीड़े-मकोड़े, सांप-बिच्छू आदि ही हमें तुच्छ और बेकार लगेंगे, एक दिन हमें यह मनुष्य भी व्यर्थ लगने लगेगा, अपना जीवन भी अर्थहीन और असंगत लगने लगेगा। फिर सृष्टि-जीवन निरर्थक लगने लगे, इसमें कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए।

आएं, हम वह निर्दोष दृष्टि पैदा करें जो इस सृष्टि-जीवन की भव्यता का अनुभव कर सके, क्षुद्र जीवधारियों के जीवन की भी उपयोगिता और सार्थकता को समझ सके, हर लघुतम इकाई और विराट के बीच विराजमान सापेक्ष संतुलन को पहचान सके। उसी दिन मनुष्य के जीवन को एक नया अर्थ मिल सकेगा। सृष्टि-जीवन की विराट्ता के साथ उसे अपनी विराट्ता के दर्शन हो सकेंगे। फिर हर क्षुद्र महान् में बदल जाएगा, हर जहर अमृत में बदल जाएगा, हर अणु विराट् में बदल जाएगा।

❖❖❖

आप तो हर मंजिल को मुश्किल समझते हैं,
और हम हर मुश्किल को मंजिल समझते हैं,
बड़ा फर्क है आपके और हमारे नजरिये में,
आप दिल को दर्द, हम दर्द को दिल समझते हैं।

-आचार्य रूपचन्द्र

तीर निशाने पर

○ संघ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री

रामचरित मानस के रचियता गोस्वामी तुलसीदास जी भारतीय मानस पर एक कवि के रूप में ही नहीं संत के रूप में भी श्रद्धेय बनकर छाए हुए हैं। उनकी कविताओं में कवित्व से अधिक अध्यात्म झलकता है। उनकी रचनाओं में पांडित्य प्रदर्शन और काल्पनिक रंगों की अपेक्षा सीधी सरल भाषा में वास्तविकता मुखरित हुई है।

माया से माया मिले कर कर लम्बा हाथ
तुलसी दास गरीब की कोई न पूछै बात

यह एक ऐसा पथ है जो विद्वान और जन साधारण सभी के दिल दिमागों को झकझोर देता है। क्योंकि इसमें शब्दों की बनावट नहीं भावना की यथार्थता है।

आदि कवि वाल्मिकी की विद्वत्ता जन मानस को जितना प्रभावित नहीं कर सकी उससे कहीं अधिक तुलसीदास जी लोक मानस पर छा गए। क्योंकि संत तुलसीदास जी एक भावना प्रधान व्यक्तित्व हैं, जिधर वह गए, पूरी तरह बह गए। उनके जीवन का पूर्वार्द्ध वासनाभिभूत था। वे अपनी पत्नी के पीछे ऐसे पागल बन गए थे कि उन्हें पत्नी के सिवा कुछ और नजर ही नहीं आता था। पत्नी से हटकर भगवान की तरफ मुड़े तो जीवन अध्यात्म से ओतप्रोत हो गया। पर उनको वासना से अध्यात्म की तरफ मोड़ने वाली उनकी धर्म पत्नी ही थी। जिसने अपने पति को पतन के गर्त से बचाकर एक यशस्वी जीवन प्रदान किया। पति के इहलोक और परलोक दोनों सुधार दिए। स्वयं तुलसीदास जी के ही शब्दों में... हम तो चाखा प्रेम रस, पत्नी के उपदेश... अर्थात प्रभु के प्रेम रस का आस्वाद मैंने जो चखा उसमें मूलभूत प्रेरणा मेरी धर्म पत्नी ही है।

गोस्वामी तुलसीदास का बचपन का नाम रामबोला था। जब वे पांच वर्ष के शिशु थे तब उनके पिता आत्माराम और माता हुलसी उनको लेकर बाबा बरहरिदास जी के आश्रम में गए थे और वहीं माता-पिता का देहान्त हो गया था। फलस्वरूप तुलसीदास जी का लालन-पालन बाबा नरसिंहदास जी ने ही किया लेकिन यौवन में प्रवेश करते ही तुलसीदास जी का आश्रम का जीवन छुट गया और रत्नवती नामक कन्या के साथ शादी हो जाने से

उसी के साथ रहने लगे। तुलसीदास जी का रत्नवती के शरीर के प्रति इतना व्यामोह हो गया कि वे एक पल के लिए भी उसे दूर नहीं कर सकते थे। एक दिन रत्नवती तुलसीदास जी को कहे बिना ही अपने पीहर चली गई। शाम को जब तुलसीदास जी को पता चला तो वे दौड़ पड़े पत्नी को लाने। रास्ते की नदी को शव पर बैठकर पार किया और प्रेमावेश में ससुराल के बंद मकान में सर्प को रस्सी समझकर उसके सहारे प्रवेश किया तथा अपनी पत्नी के पास पहुंच गए। लेकिन इस व्यवहार से पत्नी बड़ी कुपित हुई उसने शर्म के मारे गुस्से में कह दिया-

लाज न लागत आपको दौरे आयहु साथ
धिग् धिग् ऐसे प्रेम को कहा कहौं में नाथ
अस्थि चर्ममय देह मम तामे ऐसी प्रीति
तैसी जो श्रीराम महं होती न तो भवभीति

बस लग गया तीर निशाने पर। पत्नी के मुंह से ये शब्द सुनकर तत्काल तुलसीदास जी मुड़ गए अपनी ससुराल से और फिर मुड़कर कभी पत्नी की तरफ झांका तक नहीं। क्योंकि उनका बहिर्मुखी प्रेम अन्तर मुखी बन चुका था। वासना ने वैराग्य का वरण कर लिया था।

पत्नी के तीर से शब्दों ने तुलसीदास जी को ऐसा झकझोरा कि संत बनकर साहित्य साधना और समाज सुधार में अपने पूरे जीवन को लगा दिया। क्षुद्र प्रेम को विराट बनाकर पूरी मानव जाति के कल्याण के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया।

अगर रत्नवती की मार्मिक प्रेरणा नहीं मिलती तो शायद तुलसीदास जी जैसे सक्षम व्यक्तित्व की ऊर्जा का समाज हित में उपयोग नहीं होता और न ही रामचरितमानस जैसे लोकप्रिय ग्रन्थ का निर्माण ही होता।

❖❖❖

चुटकुला

राम ना वक्त है इतना कि सिलेबस पूरा किया जाए,
ना तरकीब है कोई कि एग्जाम पास किया जाए।
ना जाने कौन सा दर्द दिया है इस पढ़ाई ने,
ना रोया जाए और ना सोया जाए!

गीतिका

-आचार्य रूपचन्द्र

गुरू का ले लो आशीर्वाद,
अलख निरंजन से होता है, गुरू का ही संवाद।।

गुरू ब्रह्मा गुरू विष्णु, महेश्वर,
परम ब्रह्म गुरू, हैं परमेश्वर
हैं सपूत प्यारे वे प्रभु के, वे ही अनहदनाद। (1)

कल्पवृक्ष सम है, गुरू का मुख
दर्शन से मिलता, सुख ही सुख
जो भी चाहो पाओ उनसे, लेकर शरण अबाध। (2)

गुरू की गरिमा, सब मत गाते
शास्त्रों का वे, सार बताते
अज्ञानी जन कैसे जाने, गुरू का ज्ञान अगाध। (3)

शिष्यों को, निर्बंध करे जो
जनम मरण, संताप हरे जो
गुरू का काम न ''रूप'' कभी भी, करना वाद-विवाद। (4)

तर्ज-जय हे जय...

कहानी

जनता और नेता

○ कमलेश भारतीय

एक जंगल था,
जी नहीं, एक जंगल है।

शायद मैं कहना यह चाहता हूं कि एक देश है। देश जंगल है। जंगल न भी सही तो जंगल की तरह पूर्णरूपेण अस्त-व्यस्त है। जंगल ही मान लें तो जंगल भी ऐसा कि सभी तरह दिन में अंधेरा छाया रहता है। रात के अंधेरे की कल्पना-मात्र से ही आत्मा कांपने लगती है।

उस जंगल में बहुत से जानवर रहते थे।

जंगल में जानवर ही तो रहेंगे। पर नहीं, शायद मैं ठीक बात अभी कह नहीं पाया हूं।

दरअसल, कहना यह चाहता हूं कि उस अंधेरे जंगल के समान देश में जानवरों की तरह जीवन बिताते हुए सारी जनता जो कई करोड़ थी, रह रही थी, ऊंह रह रही है।

हां, अब हम सभ्यता के दौर में आ पहुंचे हैं। अब जंगल और जानवर की जगह देश और जनता का प्रयोग करते हैं।

सभी जानवर दुखी थे।

उन्हें राशन की लाइनों में खड़ा होना पड़ता था। उन्हें ब्लैक में भी घी, सीमेंट आदि नहीं मिलता था। इसके बावजूद वे खुश थे। वे खुशी-खुशी क्यू में अपनी बारी का इंतजार कर सकते थे। धक्का-मुक्की करके मिलावटी वस्तुएं प्राप्त कर सरकार का आभार प्रकट करते थे कि वह उसके स्वास्थ्य का कितना ख्याल रखती है।

उन्हें दुख था तो इस बात का कि वे नये-नये स्वतंत्र हुए थे अब उन पर किसी का राज्य नहीं था। वे लाठीचार्ज, अश्रुगैस, गोली-कांडों के आदी हो चुके थे। यह भी नहीं कि उनमें पर्याप्त जागृति नहीं थी। दूसरे कई जंगलों से उन्होंने बहुत-सी बौद्धिक जागृति उधार ले रखी थी। उसे अपने-अपने दल के गले में लटका कर खूब ढिंढोरा पीट रहे थे।

शासन जनता का ही था। जनता ही राजा को चुनती थी। जनता इसलिए दुखी है कि जिस किसी को भी वह राजा अथवा सभ्य युग में नेता चुनती है वही उसका साथ नहीं देता। जनता आजकल नये राजा की तलाश में है, अर्थात् उसे नया नेता चाहिए।

जंगल में एक गुरु रहते थे। शिष्यों को शिक्षा देना उनका धर्म था। गुरू अब रहे नहीं। धीरे-धीरे चल बसे। शिष्य हैं और गुरु के नाम पर ही ठाठ से जी रहे हैं।

जनता को उन पर विश्वास था। अतः नये नेता को चुनने का अधिकार हर बार जनता उन्हें ही देती।

शिष्य विद्वान थे। एक शिष्य इतना विद्वान था कि वह बिखरी हुई जनता को हर पांच साल बाद एक स्थान पर इकट्ठा कर सकता था। दूसरा इतना समझदार था वह हर पांचवें साल जनता को धन ओर अन्न जी खोल कर बांट सकता था। तीसरा जनता के हजूम को धुआंधार भाषण झाड़ सकता था और हर पांच साल बाद नये-नये नारे तलाश सकता था। चौथा इन सबकी योग्यता का लाभ उठा सकता था। उसके पास चाहे और कोई योग्यता नहीं थी, फिर भी वह वक्त को पहचान कर कुर्सी से चिपक गया था। अब वह किसी भी हालत में गद्दी छोड़ना नहीं चाहता था।

पुरानी कहानी के अनुसार एक शेर लाना चाहिए। पर क्या करूं? शेर को कहां से लाऊं? वैसे शेर ने सबसे पहले निर्माता पंडितों को खाया था और सभी नेता, नेता बनने से पहले जनता को खाते हैं।

वैसे मैं कहना यह चाहता हूं कि... खैर, अब सब कुछ कहने का ठेका मैंने ही तो नहीं ले रखा। कुछ आप स्वयं भी तो सोचें, समझें।

संवेदना-समाचार

लालाश्री रघुवीरचंदजी राजलीवाल को पुत्र शोक

हिसार का सुप्रसिद्ध समाज सेवी राजलीवाल परिवार के श्री रघुवीरचंद जी राजलीवाल के ज्येष्ठ सुपुत्र मुरारी जी के आकस्मिक असामयिक निधन से पूरे समाज में शोक की लहर दौड़ गई। मुरारी जी कुल पचास वर्ष के थे। रात्रि में सकुशल सोए थे किसी प्रकार की कोई बीमारी नहीं थी। लेकिन रात्रि गहरी नींद में ही वे संसार से बिदा हो गए। इस प्रसंग पर पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी तथा महासती मंजुलाश्री जी ने अपने संवेदना-संदेश में कहा- ऐसी अकल्पित घटनाएं जहां जीवन की नश्वरता दरसाती है वहां प्रेरणा भी देती है कि मौत के समय का कोई भरोसा नहीं, इसलिए हम पाप और अशुभ से बचें तथा शुभ और पुण्य-कार्यों में तत्पर रहें। आपने कहा- इस दुःखद घड़ी में लालाश्री रघुवीर जी ने जिस हिम्मत, धीरज, मोह-मुक्त रहते हुए प्रभु-इच्छा के प्रति अपनी अटूट निष्ठा दिखाई, वह प्रशंसनीय है, सबके लिए अनुकरणीय है।

यहां यह उल्लेखनीय है श्री राजलीवाल परिवार की सराहनीय सेवाएं मानव मंदिर हिसार और मानव मंदिर दिल्ली के सेवा-कार्यों में सदैव रही है। पूज्यवर के मिशन के प्रति यह परिवार पूरी श्रद्धा-भावना से जुड़ा हुआ है। मुरारीजी की आत्मा की शांति, सद्गति की कामना करते हुए मानव मंदिर मिशन तथा रूपरेखा-पत्रिका परिवार परमात्मा से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा पर वे अपना आशीर्वाद सदा बनाये रखें।

ॐ शांतिः शांतिः शांतिः।

भजन

❖ साध्वी मंजुश्री

मेरे प्रभु का पारस नाम,
पारस नाम है सुखधाम, प्रभु का नाम।

वामा नन्दन कलुष निकंदन,
भव भय भंजन जन मन रंजन,
भक्त जनों के हो विश्राम

पार्श्व नाम में अद्भुत शक्ति,
जो रखता है श्रद्धा भक्ति,
पग पग पाए विजय तमाम।

नाग नागिनी को तुमने तारे,
इस जीवन को क्यों न संभारे,
कैसे भूले आतमराम।

मेरे घर में करो उजेरा,
काटो दुःख अशान्ति घेरा,
मैं तो ध्याऊँ पल पल नाम।

मंजु बन्धन मुक्ति पाऊँ, साधना संदीप जलाऊँ
प्रगटे प्रकाश पुंज प्रकाम।

तर्ज- मेरे प्रभु का ले लो नाम

कहानी

त्याग ही जीवन है

एक नगर में धर्मपाल नामक एक व्यापारी रहता था। उसके तीन पुत्र थे। मनीष और विशाल का मन कभी भी काम में नहीं लगता था। शराब और जुआ खेलना उनकी जिन्दगी बन चुकी थी। सबसे छोटा भाई राहुल बहुत समझदार और मेहनती था। गरीबों की मदद करना वह अपना सौभाग्य समझता था। धर्मपाल हमेशा बीमार रहा करता था। इसलिए उसने अपने तीनों पुत्रों और पुत्री में सम्पत्ति का बंटवारा कर दिया और अचानक एक दिन उसका देहान्त हो गया।

धर्मपाल के देहान्त के बाद मनीष और विशाल, राहुल और अपनी बहन राखी पर अत्याचार करने लगे तथा कुछ समय के बाद उन्होंने राहुल और राखी की सम्पत्ति लेकर उन्हें घर से निकाल दिया। राहुल अपनी बहन राखी को साथ लेकर गंगापुर नामक गांव में रहने लगा। उसने अपने अत्याचारी भाइयों से कुछ पैसे बचाकर रखे थे अतः गंगापुर में एक खेत खरीदा और वहां के जमींदार से आठ हजार रूपये उधार लेकर बीज बोये किन्तु वहां चार महीने तक बरसात ही नहीं हुई। बेचारे राहुल के रूपये डूब गये ओर वह जमींदार का कर्जदार हो गया। राहुल जमींदार के यहां गायों को नहलाने चराने का काम करने लगा जिसके बदले जमींदार उसे अस्सी रूपये महिना देता था। इतने पैसों से जमींदार का कर्जा तो दूर उसका घर चलना भी मुश्किल था। इसलिए उसने गांव के सेठ मुंगेरी लाल के यहां रात में उसके खेतों की रखवाली का काम करना शुरू किया।

एक रात कुछ गायें मुंगेरी लाल के खेत में आकर फसल खाने लगी जमींदार वहां खड़ा था। राहुल ने उन गायों को रोकने का प्रयास किया तभी जमींदार ने कहा 'यह मेरी गायें हैं। इन्हें फसल खाने दो।'

राहुल ने जमींदार की बात का विरोध करते हुए कहा 'मैं अपने सेठ से नमक हरामी नहीं करूंगा।' जमींदार यह सुन गुस्से से लाल-पीला हो गया और उसी वक्त उसे नौकरी से निकाल दिया। जमींदार का गुस्सा अभी ठण्डा नहीं हुआ था।

सुबह होने पर उसने मुंगेरी लाला को राहुल के खिलाफ भड़काया, जिससे मुंगेरी लाल ने भी उसे काम से निकाल दिया।

राहुल रोजगार की तलाश में शहर चला गया और वहां एक धनवान के पास काम करने लगा। एक दिन राहुल काम कर रहा था तभी उसे एक चिट्ठी मिली। उसने चिट्ठी

पढी तो खुशी से झूम उठा। उस खत में यह लिखा था कि उसने खेत में जो बीज बोए थे वह बेकार नहीं हुए हैं। बरसात होने के कारण पौधे बन गए हैं तथा अब फसल एकदम तैयार है। राहुल ने वापस गांव आकर फसल काटी और जमींदार को बेच दी तथा उसका कर्जा भी अदा कर दिया। जमींदार के कहने पर राहुल ने अपनी बहन राखी का रिश्ता जमींदार के बेटे से कर दिया। राहुल ब्याह की पूरी तैयारियां कर चुका था। वह अपने भाइयों के पास न्योता देने गया।

भाइयों की दुर्दशा देख राहुल को बहुत दुःख हुआ। उन्होंने अपने पिता की सम्पत्ति शराब व जुए में उड़ा दी, पुश्तैनी हवेली भी बेच दी। राहुल अपने भाइयों को गंगापुर ले आया। वहां उसने अपनी बहन की शादी बड़ी धूमधाम से की। मनीष और विशाल ने राहुल से जुआ और शराब छोड़ने की कसम खाई। उसने उन दोनों लालची व अत्याचारी भाईयों को खजूर की दुकान फिर से खोल कर दे दी।

राहुल का धंधा दिन दुगना रात चौगुना बढ़ता जा रहा था। एक दिन मनीष और विशाल ने राहुल से कहा 'भाई चलो कहीं घूमने चलते हैं। और वह लोग एक घने जंगल में चले गए। प्यास लगने के कारण तीनों एक गहरी नदी के पास गए। मनीष व विशाल ने राहुल को नदी में ढ़केल दिया और हंसते-हंसते घर चले गए। घर पर जा कर खेद प्रकट करते हुए कहने लगे कि राहुल नदी में डूब गया।

एक मछुआरा अपनी नाव लेकर जा रहा था। उसने राहुल को देखा और बचा लिया। राहुल होश में आने के बाद अपने घर गया। राहुल को देख उसके परिवारजन चौंक पड़े। मनीष व विशाल ने राहुल से पूछा- 'तुम नदी में डूब गए थे फिर कैसे बच गए?' राहुल ने जवाब दिया 'मारने वाले से बचाने वाला बड़ा होता है। तुमने मुझे मारने के लिए अपनी तरफ से कोई कसर नहीं छोड़ी थी। किन्तु मेरी किस्मत ने मुझे बचा लिया।' राहुल ने कहा 'मुझे तुमसे कोई शिकायत नहीं हैं मैं तुम लोगों को घर से नहीं निकालूंगा, क्योंकि यदि कोई अपने साथ बुरा करता है तो उसका भला ही करना चाहिए।' यह सुन दोनों भाइयों की आंखें खुल गई। उन्होंने अब सचमुच सुधर जाने की कसम खाई और सभी लोग सुखपूर्वक रहने लगे।

❖❖❖

-प्रस्तुति : साध्वी पद्मश्री

मौन की भाषा

मन का मनका फेरने से ही मुक्ति

ज्ञानी जनों ने कहा है कि सांसारिक शब्दों की तुलना में 'स्तोत्र' का पाठ हितकारी है, उसकी अपेक्षा 'जप' लाभप्रद है। उससे भी अधिक हितकारी है 'वाचिक-मानसिक मौन।' वाणी का अपव्यय रोककर शक्ति का क्षय रोकना परम मौन को प्राप्त होना है।

बाहर का बोलना वासना क्षय में बाधक है और भीतर का बोलना मन को दूषित करता है। इस प्रकार दोनों प्रकार से बोलना विचार में बाधक है। मौन रहना ग्रहण करने की अवस्था है। मौन से ध्यान में अधिक सहायता मिलती है। बताया गया है कि मौन से संकल्प बल की वृद्धि और वाणी के आवेगों पर अंकुश लगता है, शारीरिक व मानसिक क्षमता में वृद्धि होती है और स्नायु तंत्रों पर विश्रांतिदायक प्रभाव पड़ता है।

अपेक्षाएं कम होने पर ही मौन आदि नियम सफल और दृढ़ हो पाते हैं। देखने से काम चल सकता है, तो बोलने की क्या जरूरत है। मौन का अर्थ है न बोलना, न सोचना। संकल्प-विकल्प त्याग कर मौन रहना, मौन की सर्वोपरि दशा है। मौन की अवस्था में परमात्मा से प्रेरणा मिल सकती है।

मौन अद्वैत की ओर ले जाता है, जबकि बोलना द्वैत का पोषक है। एकांत में रहना, अल्पाहार, मौन, कोई आशा न करना, इंद्रिय संयम और प्राणायाम- ये छह साधन मनुष्य को शीघ्र ही शांति प्रदान करते हैं।

माघ मास की अमावस्या को मौनी अमावस्या कहा गया है। मुनि शब्द से मौनी बना है। मान्यता है इस दिन को मौन धारण करके समापन करने वाले को मुनि पद की प्राप्ति होती है। माघ मास के स्नान का सबसे महत्वपूर्ण पर्व मौनी अमावस्या ही है। चूंकि इस व्रत में साधक को मौन रहना पड़ता है, इसलिए यह योग पर आधारित व्रत है।

शास्त्रों में वर्णन आया है कि होठों से जाप करने से कई गुना फल मानसिक जाप से मिलता है। इस तिथि को मुनियों की तरह चुप रहें तो उत्तम है। अगर ऐसा संभव नहीं हो तो किसी के प्रति कटु शब्दों के प्रयोग से बचने का सभी प्रकार से प्रयत्न करना चाहिए। निष्काम सेवा का फल मधुर होता है, यही इस व्रत का अभीष्ट है।

ऐसा कहा जाता है कि सृष्टि में जिस वक्त अंधेरा ही अंधेरा था, उस वक्त एक प्रकाश प्रस्फुटित हुआ और वही प्रकाश पूरे जगत में फैल गया, जो कि दिव्यपुंज कहलाया। हो सकता है वह अमावस्या जैसी ही रात रही हो। मौन में जीवात्मा का परमेश्वर से सीधा संबंध होता है। इसमें प्रपंच का कोई स्थान नहीं है। तर्क-वितर्क-कुतर्क भी परमात्मा के नाम नहीं है। वह तो आस्था और विश्वास का नाम है। ब्रह्म और सृष्टि को जानने का पर्याय मौनी अमावस्या है। इस तरह मौनी अमावस्या प्रकृति के तत्व को जानने और एकांत

साधना का पर्व है। मौन रहकर सांसारिक-भौतिक पदार्थों से विरक्त होकर केवल ईश्वरीय आराधना करने, उसका चिंतन और उसके तत्व को जानने का पर्व है। मौन की एक भाषा होती है, जिसे सिर्फ अनुभव किया जा सकता है। हमारे जीवन में भी हम इसे अनुभव करते हैं। मन जब बेचैन हो तो किसी अपने का हाथ पाकर बड़ी सहानुभूति का अनुभव होता है। इसमें न कोई भाषा होती है और न स्वर, पर चुपके से तुष्टि मिल जाती है। संसार में बोली जाने वाली सभी भाषाओं का एक ही लक्ष्य है- सम्यक भाव संचार। बोलने तथा लिखने के झंझट से दूर मौन की अपनी भाषा है। दिव्य भाषा के रूप में मौन धारण करना सृष्टि के आरंभ से ही प्रभावी रहा है। मौन साधना ही ऐसी स्थिति है, जो व्यापक और स्थिर क्षेत्र खोलती है। सांसारिक भाषाएं सीमित शब्दों से बंधी हैं, लेकिन मौन के शब्द बेहिसाब हैं। मौन आत्यिक भाष्य, आचरण व व्यवहार का सत् है।

मौन शांति की भाषा है और इसका सहज अभ्यास सबको सुलभ है। पारस्परिक सद्भाव का स्रोत मौन में है। कठिन से कठिन परिस्थितियों में मौन सफल अस्त्र है। मौन की भाषा पहले खुद सीखनी चाहिए, फिर दूसरों को प्रेरणा देनी चाहिए।

-प्रस्तुति : साध्वी बसुमति जी

गजल

-महेन्द्र जैन

बन आस्तीन का सांप यूं डसने लगे हैं लोग
अब दोस्ती के नाम से डरने लगे हैं लोग

संवेदनाएं मिटती जाती कुछ इस तरह
अब बेझिझक ही मारने मरने लगे हैं लोग

होगी सुरक्षा नारी की अब कैसे सोचिए
जब कोख में ही वार यूं करने लगे हैं लोग

बीभत्स रूप अपना कुछ ऐसा बना लिया
शीशे में शक्ल देखके डरने लगे हैं लोग

खिलवाड़ हो रहा है यूं मासूमियत के साथ
पेट अपना, छीन बच्चों से भरने लगे हैं लोग

गीता कुरान वेद से कुछ वास्ता नहीं
अश्लील पुस्तकों को ही पढ़ने लगे हैं लोग

कई रोगों की रामबाण दवा है तुलसी

तुलसी अत्यंत महत्वपूर्ण एवं उपयोगी पौधा है। इसके सभी भाग अलौकिक शक्ति और तत्वों से परिपूर्ण माने गए हैं। तुलसी के पौधे से निकलने वाली सुगंध वातावरण को शुद्ध रखने में तो अति महत्वपूर्ण भूमिका निभाती ही है, भारत में आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति में भी तुलसी का बहुत महत्वपूर्ण स्थान रहा है सदियों से औषधीय रूप में प्रयोग होता चला आ रहा है।

तुलसी में छोटे-मोटे रोगों से लेकर असाध्य रोगों को भी जड़ से खत्म कर देने की अद्‌भुत क्षमता है। इसके गुणों को जानकर और तुलसी का उचित उपयोग कर हमें अत्यधिक लाभ मिल सकता है। आइए जानें तुलसी के महत्वपूर्ण औषधीय उपयोगों एवं गुणों कोः-

- श्वेत तुलसी बच्चों के कफ विकार, सर्दी, खांसी इत्यादि में लाभदायक है।
- कफ निवारणार्थ तुलसी को काली मिर्च पाउडर के साथ लेने से बहुत लाभ होता है।
- गले में सूजन तथा गले की खराश दूर करने के लिए तुलसी के बीच का सेवन शक्कर के साथ करने से बहुत राहत मिलती हैं
- तुलसी के पत्तों को काली मिर्च, सौंठ तथा चीनी के साथ पानी में उबालकर पीने से खांसी, जुकाम, फ्लू और बुखार में फायदा पहुंचता है।
- पेट में दर्द होने पर तुलसी रस और अदरक का रस समान मात्रा में लेने से दर्द में राहत मिलती है। इसके उपयोग से पाचन क्रिया में भी सुधार होता है।
- कान के साधारण दर्द में तुलसी की पत्तियों का रस गुनगुना करके डालें।
- नित्य प्रति तुलसी की पत्तियां चबाकर खाने से रक्त साफ होता है।
- चर्म रोग होने पर तुलसी के पत्तों के रस को नींबू के रस में मिलाकर लगाने से फायदा होता है।
- तुलसी के पत्तों का रस पीने से शरीर में ताकत और स्मरण शक्ति में वृद्धि होती है।
- प्रवस के समय स्त्रियों को तुलसी के पत्तों का रस देने से प्रवस पीड़ा कम होती है।
- तुलसी की जड़ का चूर्ण पान में रखकर खिलाने से स्त्रियों का अनावश्यक रक्तस्राव बंद होता है।
- जहरीले कीड़े या सांप के काटने पर तुलसी की जड़ पीसकर काटे गए स्थान पर लगाने से दर्द में राहत मिलती है।
- फोड़े-फुंसी आदि पर तुलसी के पत्तों का लेप लाभदायक होता है।
- तुलसी की मंजरी और अजवायन देने से चेचक का प्रभाव कम होता है।

- तुलसी के बीजों का सेवन दूध के साथ करने से पुरुषों में बल, वीर्य और संतानोत्पत्ति की क्षमता में वृद्धि होती है।
- तुलसी का प्रयोग मलेरिया बुखार के प्रकोप को भी कम करता है।
- तुलसी का शर्बत, अवलेह इत्यादि बनाकर पीने से मन शांत रहता है।
- आलस्य, निराशा, कफ, सिरदर्द, जुकाम, खांसी, शरीर की ऐंठन, अकड़न इत्यादि बीमारियों को दूर करने के लिए तुलसी की चाय का सेवन करें।

-प्रस्तुति : अरूण तिवारी

चुटकुले

1. एक साहब 100 साल के हो तो एक संवादाता उनका इंटरव्यू लेने आया।
पहला सवाल- आपकी सेहत कैसी है?
बुजफर्गवार बोले- बहुत बढ़िया। देखिए आज से 100 साल पहले मैं चल फिर नहीं सकता था। आज कम से कम उपने इस मकान के कई चक्कर लगा सकता हूं।

2. सुरेश ने एक दिन अपने बेटे की जैकिट की तलाशी ली। उसमें सिगरेट, गुटका और लड़कियों के फोन नंबर निकले।
उसने बेटे को बहुत मारा और पूछा- कब से चल रहा है यह सब?
बेटे ने रोते हुए कहा- पापा यह तो आपकी जैकिट है।

3. बेटा- पापा आप मुझे रोज क्यों पीटते हो, क्या आपके पापा भी आपको रोज पीटा करते थे?
पापा- हां लेकिन लेकिन तुम यह क्यों पूछ रहे हो।
बेटा- क्योंकि मैं यह जानना चाहता हूं कि यह खानदानी गुंडागर्दी कब से चली आ रही है।

4. टीचर- सबसे ज्यादा ठंड कहां होती है?
नकुल- फ्रिज में सर।

5. चन्दन- जानते हो बिल-गेट्स और मुझमें क्या समानता है?
प्रवीण- नहीं।
चन्दन- न कभी वह मेरे घर आता है, और न मैं कभी उसके घर जाता हूं।

बोलें-तारे

मासिक राशि भविष्यफल-जनवरी 2011

○ डॉ.एन.पी मित्तल,पलवल

मेष–मेष राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से देखें तो आय सामान्य रहेगी। तथा व्यय अधिक रहेगा। व्ययाधिक्य के कारण मानसिक चिंता रहेगी। सत्संग,उपासना आदि लाभप्रद रहेंगे। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह माह सामान्य रहेगा। पत्नी तथा संतान के स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। समाज में मान-सम्मान बना रहेगा।

वृष–वृष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह पूर्वाद्ध में अच्छा नहीं हे। विरोधी पक्ष कार्यों में रूकावट डालेगा। जिन्हें आप अपना समझते है वे ही अंदर खाने आपका विरोध कर सकते हैं। उत्तरार्ध में स्थिति में सुधार आयेगा। आत्मविश्वास की वृद्धि होगी नई योजना बनेंगी। विरोधियों पर काबू पाने में आप सक्षम होंगे।

मिथुन–मिथुन राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह पूर्वाद्ध में अच्छा है। कार्यों में सफलता मिलेगी, किन्तु उत्तरार्ध में व्यर्थ के वाद विवाद होंगे तथा आय पर भी विपरीत असर पड़ेगा। हां अचानक कोई लाभ की स्थिति आ सकती है। समाज में यश, मान, प्रतिष्ठा बनी रहेगी। किसी पुराने केस के निपटारे से खुशी मिलेगी।

कर्क–कर्क राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुल मिलाकर अच्छा रहेगा। सामान्यतः लाभ देने वाला है। मित्र बंधु मददगार रहेंगे। कोई पिछला रूका हुआ पैसा भी इस माह मिल सकता है जिससे मानसिक चिंता दूर होगी। हां प्रेम संबंधों में दरार आ सकती है। इसी कारण कोई झगडा आदि भी बन सकता है।

सिंह–सिंह राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से सामान्य फलदायक है। घर के झंझटों से ही फुर्सत नहीं मिलेगी। किसी का आप भला करना चाहेंगे तो भी बुराई ही मिलेगी। बिन मतलब के किसी के मामले में दखल न दें। जब आपको कुछ न सूझे तो बुजुर्गो की सलाह अवश्य लें। किसी नई योजना का क्रियान्वयन भी हो सकता है। समाज में मान-सम्मान बना रहेगा।

कन्या–कन्या राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह पूर्वाद्ध में लाभ देने वाला है तथा उत्तरार्ध में सामान्य फल देने वाला है। परिश्रम साध्य फल देने वाला है। कोई शुभ कार्य आपके हाथों से हो सकता हैं। बंधु-मित्र आपके शुभ कार्यों में आपका साथ देंगे। तर्क-वितर्क से बचें। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। कुछ जातकों की विदेश यात्रा भी हो सकती है किंतु यात्रा सफल होने में शंका है।

तुला–तुला राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से लाभालाभ की स्थिति लिये रहेगा। अनावश्यक रूप से किसी स्कीम में पैसा न लगाएं। नुकसान हो सकता है। विरोधी तत्वों के सक्रिय रहने से मानसिक परेशानी रहेगी। हां सरकारी कर्मचारी अचानक लाभ की आशा कर सकते है। परिवार में कोई धार्मिक अनुष्ठान हो सकता है।

वृश्चिक–वृश्चिक राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से अधिक आर्थिक लाभ की उम्मीद नहीं की जा सकती । इस संबंध में की जाने वाली यात्राएं भी शुभफल नहीं दे पायेंगी। आपसी मन मुटाव तथा कोर्ट-कचहरी की नौबत न आने दें। अपने बुजुर्गों को सम्मान दें तथा उनकी सलाह से काम करें। दाम्पत्य जीवन में सामन्जस्य बनाए रखें। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहे।

धनु–धनु राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह मास परिश्रम साध्य लाभ लिये होगा। अपनी शक्ति से अधिक न तो कार्य करें और न ही अनावश्यक रूप से किसी स्कीम में धन लगाए। यही श्रेयस्कर रहेगा। आवश्यकता से अधिक किसी पर भी विश्वास न करें। मौका पाकर अपने ही धोखा दे सकते हैं। छोटी-बड़ी यात्राये होंगी जो श्रेयस्कर रहेगी। किन्हीं सरकारी कर्मचारियों का पदोन्नति का योग बनेगा।

मकर–मकर राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से अन्य लाभ वाला होगा। वर्तमान में जीएं। बीती बातों को स्मरण करके परेशान होने के अलावा कुछ हासिल नहीं होगा। नये आगन्तुकों से मेल मिलाप में सावधानी बरतें। परिश्रम से जी न चुरायें तो अच्छा फल मिलेगा। कोई नई योजना बनेगी जिसका क्रियान्वयन आगे होगा।

कुम्भ–कुम्भ राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि ये यह माह आय से अधिक खर्च वाला रहेगा। व्यस्तता अधिक रहेगी। योजना तो कई बनेंगी किंतु उनको कार्यरूप में परिणित नहीं किया जा सकेगा। किसी अज्ञात भय के कारण मानसिक परेशानी बनेगी। शत्रु सिर उठायेंगे, किंतु वे अपना ही नुक्सान कर बैठेंगे।

मीन–मीन राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से अधिक मेहनत करने के पश्चात भी अन्य लाभ वाला होगा। वातावरण ऐसा बनेगा कि मानसिक चिंता बनी रहेगी। कार्य पूरा होने की आशा बनेगी पर कार्य पूर्ण नहीं होगा। व्ययाधिक्य के कारण ऋण लेने की स्थिति भी आ सकती है। कोई लंबी यात्रा का योग भी बन सकता है। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। समाज में अपकीर्ति का भय है।

-इति शुभम्

सृष्टि का रचना-विधान दान पर टिका है, संग्रह पर नहीं

मानव मंदिर मिशन के 29वें वार्षिकोत्सव पर पूज्यवर का उद्‌बोधन

5 दिसम्बर, 2010 रविवार, जैन आश्रम परिसर में मानव मंदिर मिशन के 29वें वार्षिकोत्सव पर उपस्थित विशाल जन-समुदाय को संबोधित करते हुए पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी ने कहा- इस सृष्टि का पूरा रचना-विधान दान पर टिका है, संग्रह-परिग्रह पर नहीं। सूरज पूरे संसार को रोशनी का दान करता है। चंद्रमा चांदनी देता है। नदियां जल का दान करती हैं। पेड़ फलों का दान करते हैं। हवाएं प्राण-वायु का दान करती हैं। आकाश आश्रय देता है। अग्नि उष्मा देती है। खेत फसल देते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं हमारा पूरा जीवन दान पर टिका है, देने पर टिका है लेने पर नहीं। केवल इसलिए सभी संतों, महापुरूषों और शास्त्रों ने दान की इतनी महिमा गाई है। किंतु यहां यह समझना जरूरी है प्रकृति द्वारा दिया जाने वाला दान बिल्कुल निःस्वार्थ और निष्काम है। यहां किसी भी प्रकार के प्रति-दान की कामना नहीं है। महापुरूषों द्वारा निर्दिष्ट दान-महिमा के पीछे भी यही प्रेरणा है।

आपने कहा- आदमी जब केवल परिग्रह-संग्रह में लग जाता है, तभी समाज और देश में हिंसा, क्रूरता, भ्रष्टाचार और कदाचार बढ़ता है। इसलिए जरूरी है व्यक्ति में त्याग, सेवा और दान के संस्कार आए। केवल परार्थ और परमार्थ ही आत्मा की पूंजी है। आपने कहा- हमें यह सदा स्मरण रखना चाहिए हम शरीर नहीं, आत्मा है। यह आत्मा अमर है। मृत्यु के पश्चात् सारी भौतिक संपदाएं यहीं छूट जाती हैं। किन्तु अपनी शुभ और अशुभ पूंजी ही आत्मा के साथ जाती है। इसलिए निःस्वार्थ और निष्काम त्याग और सेवा के संस्कार समाज में आए, इसी उदेश्य से मानव मंदिर मिशन की स्थापना की गई है। इसमें पंथ-संप्रदाय-गत मान्यताओं और परंपराओं को कोई स्थान नहीं है। व्यक्ति परोपकार, सेवी, परार्थ और परमार्थ से जुड़े, इसी दिशा में यह मिशन प्रयास-रत है।

पूज्यवर के मंगल मंत्रों के उच्चारण के साथ अधिवेशन का शुभ आरंभ हुआ। श्री रमणजी डागा, श्री आलोकजी अग्रवाल (एडवोकेट) महासचिव श्री आर.के. जैन आदि द्वारा दीप-प्रज्ज्वलन के पश्चात् साध्वी चांदकुमारीजी, साध्वी कनकलता जी, साध्वी पदमश्री जी ने महावीर-स्तुति प्रस्तुत की। श्री मनीष जी ने मधुर स्वरों में 'मन सुमर सुमर महावीर' भजन प्रस्तुत किया। कत्थक-नृत्यांगना अंशुप्रिया बालिका ने मनमोहक नृत्य द्वारा प्रभु-वंदना की। पूज्या संघ-प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्री जी ने अपने प्रेरणादायी प्रवचन में कहा- अपने लिए तथा अपनों के लिए तो सभी जीते हैं। किन्तु जिनका इस संसार में कोई सहारा नहीं है, उनका हम सहारा बनें, मानव मंदिर मिशन की स्थापना पूज्य गुरूदेव ने इसी उद्देश्य से की है। आपने कहा- मानव मंदिर गुरूकुल के बच्चों को मंत्र-पाठ, योगाभ्यास तथा विद्यालयीन शिक्षा के साथ-साथ ऊंचे संस्कार दिये जाते हैं। ऐसा उपक्रम आज अन्यत्र दुर्लभ है। युवा सौरभ मुनि ने संस्कृत में परमात्म-स्तुति तथा 'तेरी महरवानी का है बोझ इतना,

जिसे मैं उठाने के काविल नहीं हूं' आत्मा को छूने वाला भजन प्रस्तुत किया, जिसे सुनकर पूरा जन-समुदाय भक्ति-सागर में डूब गया।

साध्वी समताश्री जी ने अपने संयोजकीय भाषण में शिक्षा और योग-विद्या में गुरूकुल के बच्चों द्वारा प्राप्त उपलब्धियों की जानकारी जन-समूह को दी। ग्यारहवीं कक्षा के छात्र गगन द्वारा निर्मित साइंस-माडल (Artificial Rain) ने पूरे उत्तरी भारत में प्रथम स्थान तथा पूरे भारत में द्वितीय स्थान पाने की जानकारी पाकर जन-समुदाय ने करतल-ध्वनि से अपना उल्लास प्रकट किया।

मानव मंदिर गुरूकुल के बच्चों द्वारा आरंभ में स्वागतम् स्वागतम् अति स्वागतम् गीत, कार्यक्रम के मध्य में 'कदम बढाता चल' प्रेरणा-गीत तथा 'मां तुझे सलाम' देश रंगीला रंगीला तथा हिन्द के बहादुरो जैसे राष्ट्र-गीत रंगारंग कार्यक्रम भावपूर्ण नृत्य-मुद्राओं में प्रस्तुत कर जन-समुदाय से खूब वाह-वाही लूटी। श्री राम-रमेति ट्रष्ट के ट्रष्टी श्री सत्यप्रकाश जी ने मिशन के साथ सेवा-कार्य करने की इच्छा प्रकट की। स्वागताध्यक्ष श्री रिखबचन्द जी ने समागत अतिथियों तथा जन-समुदाय का स्वागत करते हुए कहा- आज देश में शिक्षा का स्तर बढा है, आर्थिक समृद्धि भी बढी है, किन्तु दहेज, बलात्कार, हिंसा और भ्रष्टाचार भी बढ रहे हैं इसका प्रमुख कारण शिक्षा के साथ उन्नत संस्कारों का अभाव है। मानव मंदिर मिशन इस दिशा में सराहनीय प्रयास कर रहा है। आपने योग्यता और गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए बच्चों की सीमित संख्या रखने का सुझाव दिया। सुप्रसिद्ध एडवोकेट श्री आलोकजी ने मिशन द्वारा संचालित सेवा-कार्यों की भरपूर प्रशंसा की। समाजसेवी श्री सलेकचन्द जी कागजी ने बच्चों को आशीर्वाद दिया। स्थानीय विधायक संसदीय सचिव श्री तरविन्दर सिंह मरवाह ने पूज्यवर के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करते हुए कहा- मैं आपमें परमात्मा के नूर का दर्शन करता हूं।

पूज्य गुरूदेव के प्रवचन से पूर्व दिवंगत नारी-रत्न श्रीमती भारती बहिन कोठारी भक्ति-संगीत के अमर गायक श्री राजेन्द्र जैन तथा समाज-सेवी श्री भंवरलालजी सुराणा को जन-समुदाय द्वारा मौन श्रद्धांजलि दी गई।

इस वार्षिकोत्सव में जहां आश्रम का विशाल परिसर खचाखच भरा था, वहां श्री स्वदेशपालजी, श्री आलोकजी, श्री मुलखराजजी, श्री सलेकचन्दजी श्री रामगोपाल जी, श्री मरवाहजी विख्यात कत्थक-नृत्यांगना सुश्री नलिनी-कमलिनी, डां. सतीश जैन, डॉ. पांडव (एम्स), डॉ. तलवार जी, डॉ. विनीताजी, श्री सुभाषजी तिवारी, श्री मोहन उपाध्याय आदि सम्माननीय अतिथि के रूप में उपस्थित थे। भंडारा/प्रसाद का सुरूचिकर भोजन लाला रामकुमार केदारनाथ अग्रवाल की ओर से रहा। पूज्यवर के मंगल-पाठ के साथ समारोह संपन्न हुआ। समारोह की आकर्षक प्रस्तुतियों की अच्छी गूंज शहर में रही। अधिवेशन को सफल बनाने में मानव मंदिर सेवा दल ने व्यवस्थापक अरुण तिवारी की अगुवाई में अपना प्रशंशनीय योग दान प्रदान किया।

-अधिवेशन में अपना उद्‌बोधन-प्रवचन देते हुए पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी महाराज।

-गुरूकुल के बच्चों द्वारा प्रस्तुत रंगारंग कार्यक्रमों का आनंद लेते हुए जन-समुदाय। (प्रथम पंक्ति दायें से) श्री सुभाषजी डालमियां, श्री बलभद्र दासजी, सुश्री नलिनी-कमलिनी (विख्यात कत्थक नृत्यांगना) (दूसरी पंक्ति) डॉ. पांडव जी, डॉ. सतीश जैन, श्री सतीश रीटा ओसवाल, डॉ. विनीता गुप्ता आदि।

-समाज-सेवी श्री रिखबचन्दजी जैन (चेअरमेन-टी.टी. उद्योग समूह) अपना स्वागत-भाषण करते हुए।

-समाज-सेवी श्रीमती मंजुवाई जैन बच्चों के संस्कार-निर्माण कार्य के प्रति अपनी हार्दिक प्रसन्नता प्रकट करते हुए।

-स्थानीय विधायक संसदीय सचिव श्रीमान तरविन्दर सिंह मरवाह जी पूज्यवर के प्रति अपना श्रद्धा-सम्मान प्रकट करते हुए।

-श्री राम-रमेति ट्रष्ट के ट्रष्टी श्री सत्यप्रकाश जी मानव मंदिर मिशन के सेवा-कार्यों से जुड़कर कार्य-संकल्प की घोषणा करते हुए।

-श्री महावीर-स्तुति का संगान करते हुए साध्वी कनकलताजी, साध्वी पदमश्रीजी तथा श्रीमती निर्मला पुगलिया (संपादिका-रूपरेखा)।

-दीप-प्रज्ज्वलन करते हुए (बायें से) महासचिव श्री आर.के.जैन, एडवोकेट श्री आलोकजी अग्रवाल, श्री रमण डागा आदि।

-मानव मंदिर मिशन की वयोवृद्ध साध्वियां (दायें से) सरलमना साध्वी मंजुश्रीजी, साध्वी दीपांजी, साध्वी चांदकुमारीजी तथा साध्वी सुभद्राजी (बाई महाराज)।

-प्रभु-वंदना की भावपूर्ण प्रस्तुति देते हुए कुमारी अंशुप्रिया।

-स्वागत-गीत का संगान करते हुए गुरूकुल के बच्चे- (बायें से) सुशांत, मनीष, गगन, प्रदीप, गौरव, नवीन आदि।

-सांस्कृतिक कार्यक्रम देते हुए गुरूकुल के नन्हे बच्चे।